Research Paper | History | E-ISSN No : 2454-9916 | Volume : 5 | Issue : 9 | Sep 2019

PRACHY VIDYA KE VIKASH ME MAHARAJADHIRAJ DR. SIR. KAMESHWAR SINGH KA YOGDAN

प्राच्य विद्या के विकास में महाराजाधिराज डॉ. सर कामेश्वर सिंह का योगदान।

Dr. Ravindra Kumar

M.A., Ph.D., History, Lakhminiya Bazar, Dis. Begusaray, India.

भारतवर्ष के प्राक्–ऐतिहासिक युग साहित्य में मिथिला वा तिरुहुत का स्थान विशिष्ट एवं प्राचीनतम है। इसका अतीत अत्यंत समुज्जल रहा है जो किसी भी देश अथवा जाति को गौरवान्वित करने के लिए पर्याप्त है। इस जनपद के प्राचीन निवासी एवं भूपति गण जितने ही अपने शुद्धाचार, ज्ञान, विज्ञान, वैभव तथा न्याय प्रियता के लिए प्रसिद्ध थे, उतना ही उनके शौर्य एवं पराक्रम भी अदम्य था। उनके आध्यात्मिक तथा भौतिक दोनों ही पक्ष श्लाध्य और आदर्श थे। मिथिला ओईनवारवंशीय कामेश्वर–कुल की राजलक्ष्मी ने ओइनवारों से रुष्ट होकर उनका त्याग किया तथा खराडवालवंश के महेश ठाकुर को अपना स्नेहिल पुत्र बनाया। मिथिला में इस वंश का शासन 16वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में स्थापित हुआ और 20 वीं शताब्दी के मध्य में अवसान हुआ। महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह खराडवाला कुल के अंतिम नरेश थे।[1]

महाराजाधिराज रामेश्वर सिंह की मृत्यु के बाद महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह मिथिला के राज्य सिंहासन पर आसीन हुए। अपने राज्य में उसने सुधार एवं जनहित कार्य करते रहे। अपने पूज्य पिता की तरह ही वह भी निर्माणप्रिय एवं कलाविद भूपति थे। उनका विचार प्रगतिशील था उनकी अभिरुचि देश की राजनीति में अधिक थी। उन्होंने विदेश यात्रा अभी किया था और भारतीय नेतृ मंडल के एक सदस्य के रूप में अपने देश की तात्कालिक राजनीतिक स्थिति पर अंग्रेजी सरकार के नीतिज्ञ अधिकारियों के साथ विचार–विमर्श किया था। महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह के शासनकाल में ही भारत ने ब्रिटिश सरकार की पर तंत्र तक के जए को अपने कंधे से उतार फेंका। देश स्वतंत्र हुआ और जमीन दारी प्रथा का उन्मूलन हुआ ।जमीदारी उन्मूलन के पूर्व उदार महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह अनेकों जनहित कार्य किए। वे विद्या और कला के पोषक तथा विद्वानों का समादर करने वाले थे।[2]

मिथिला में खराडवाला राजकुल के शासनारंभ के लगभग 2 शताब्दी पश्चात भारत में अंग्रेजी शासन की स्थापना हुयी। अंग्रेजी शासन होने के बावजूद भी मिथिला में संस्कृत साहित्य का सृजन होता रहा। यहाँ संस्कृत का पठन–पाठन परंपरागत रूप से होता रहा। यहाँ संस्कृत के परम्परागत विद्वानों की कमी नहीं थी। इस युग में काव्य और साहित्य के अतिरिक्त धर्म शास्त्र ज्योतिष एवं तंत्र पर अत्यधिक ग्रंथ लिखे गये। यहाँ अंग्रेजी शिक्षा प्रारंभ होने के बाद भी भिन्न–भिन्न विषयों पर नए–नए ग्रंथों का निर्माण होता रहा। इसके परिणाम स्वरूप जनक एवं यज्ञवल्कय की भूमि मिथिला संस्कृतिक साहित्य सृजन क्षेत्र में नाना प्रकार के बाधाओं के होते हुए भी देश के अन्य भागों से अपेक्षाकृत आगे रही। बीसवीं शताब्दी के पूर्वाध मैं महाराजाधिराज सर कामेश्वर सिंह अंग्रेजी शिक्षा को प्रोत्साहन देते हुए भी प्राच्य विद्या संस्कृत के विकास में अपना योगदान अपने पूर्वजों की भांति अनवरत रूप से देते रहे। उनके शासनकाल में छंदशास्त्र, काव्य एवं साहित्य, व्याकरण, कोश, नीतिशास्त्र, ज्योतिष, तंत्रशास्त्र, वेद एवं वेदांगों, दर्शन, धर्मशास्त्र, शारीरिक विज्ञान एवं आधुनिक भाषा विज्ञान पर पुस्तकों का प्रणयन, होता रहा।

इस युग में ऐसे अनेकों विद्वान का उद्भव हुआ, जिन्होंने संस्कृत का भंडार दर्शन जैसे अधिग्रहण एवं गंभीर विषयों के ग्रंथों से भर दिया। ऐसे विद्वानों की प्रतिमा बहुमुखी थी। इसमें कतिपय विद्वानों ने अंग्रेजी के माध्यम से संस्कृत की सेवा की और कुछ संस्कृत एवं हिंदी के माध्यम से। इन मनीषियों ने अति कठिन विषयों पर संस्कृत वाड़्मय मैं बड़ी दक्षता के साथ संभाषण शास्त्रार्थ एवं वाद–विवाद कर सकते थे पंडित वच्चा झा, पंडित शशि नाथ झा, पंडित हरिहर कृपालु तथा पंडित बालकृष्ण मिश्रा आदि के नाम संस्कृत महान विद्वान के रूप में विख्यात थे। डॉ. झा दरभंगा जिला के सरसोंपाही टोल निवासी थे डॉक्टर गंगानाथ झा ने विशेषतया अंग्रेजी के माध्यम से प्राचीन आर्य दर्शनों पर ग्रंथ लिख कर उनका प्रचार एवं प्रसार किया डॉक्टर झा ने दर्शन विषयक कई कठिन ग्रंथों का अनुवाद सर्वसाधारण के समझने योग्य सरल अंग्रेजी करके संस्कृत नहीं जानने वाले देशी एवं विदेशी दर्शन ज्ञान प्राप्ति के इच्छुक समाज के लिए भारतीय दर्शनशास्त्र का अध्ययन सुलभ और सहज कर दिया। उर्पयुक्त विद्वान महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह के समय में ही अपनी विद्वत्ता का दीप शाखा को प्रज्वलित करते रहे। महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह ने अपने अपने अतीत की याद कर संस्कृत के विकास एक महान यज्ञ पूरा किये। उन्होंने खराडवाला कुल के कृत्य में चार चांद लगा दिए वह है संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना। उन्होंने संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए आनंद बाग का विशाल और मनोरम राजमहल दे दिए। उनके वंशज उनके मृत्यु के बाद भी अपने सारे राजमहल देकर मिथिला विश्वविद्यालय की स्थापना किये। इस विश्वविद्यालय की

Copyright© 2019, IERJ. This open-access article is published under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License which permits Share (copy and redistribute the material in any medium or format) and Adapt (remix, transform, and build upon the material) under the Attribution-NonCommercial terms.

स्थापना में स्व0 ललित नारायण मिश्रा का काफी योगदान था। अतः इस विश्वविद्यालय का नाम ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय रखा गया।[4]

वालपन से दरभंगा राज को निकट से देखने वाले मैथिली के वयोवृद्ध पंडित श्री चंद्रनाथ मिश्र अमर का कहना है कि देश के अन्य राजघरानों की संपत्तियां विभिन्न कार्यों में लगी लेकिन संस्कृत विद्या के वल पर जिस मिथिला राज को महेश ठाकुर ने प्राप्त किया था उसकी अंतिम कड़ी रहे महाराजा कामेश्वर सिंह जिनके संपत्तियों का सर्वाधिक उपयोग संस्कृत विद्या के विकास में लगाया गया।[5]

शिक्षा और प्राचीन साहित्य के विकास में महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह का अहम निर्णय आज भी ऐतिहासिक है। उन्होंने 1930 ईस्वी एवं 1948 ईस्वी में दरभंगा में ''ओरिएंटल कॉन्फ्रेंस'' करवाए थे जिसमें देश के सभी विश्वविद्यालयों के प्रसिद्ध विद्वानों को आमंत्रित किया गया था। प्रसिद्ध इतिहासकार आरसी मजूमदार की उपस्थिति एवं मिथिला के संस्कृति पर उनका भाषण आज भी चर्चित है। उन्होंने संस्कृत ही नहीं मैथिली भाषा की उन्नति हो और इसके लिए उन्होंने दान देकर कोलकाता विश्वविद्यालय में मैथिली भाषा की पढ़ाई शुरू करवाए थे। उन्होंने पटना विश्वविद्यालय को अपना आवास दान स्वरूप दे दिया जहां अभी भी स्नातकोत्तर विभाग की अध्ययन अध्यापन कार्य चलता है। उन्होंने अपने पिता के तरह इलाहाबाद विश्वविद्यालय की आर्थिक मदद करते रहे। दिल्ली के लेडी हार्डिंग कॉलेज में भी उनका अहम योगदान है।[6]

इतिहास के पन्ने आज भी गवाह है कि दरभंगा राज परिवार प्रारंभ से ही कौमी एकता के पोषक थे। इसका गवाह अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय है। इस विश्वविद्यालय को उनके द्वारा 20000 रूपया की मदद मिलती रही।

अतः संक्षिप्त में इतना ही कहा जा सकता है कि दरभंगा राज परिवार मिथिला में संस्कृत साहित्य के विकास के लिए अनवरत रूप से सहयोग देते रहे और अन्या भाषा के विकास में भी इस वंश का कम योगदान नहीं रहा। डॉ कामेश्वर सिंह महाराजाधिराज इस वंश के अंतिम कड़ी रहते हुए भी अपने वंशजों के द्वारा चलाए गए पुण्य कार्य में योगदान देते रहे। वे मिथिला के इतिहास में चिरस्मरणीय व्यक्तित्व के रूप रहेंगे।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. झा आर.एन. ''हिस्ट्री ऑफ सरकार तिरहुत अराउंड द ईस्ट इंडिया कंपनी'' (1765 1856) पृष्ठ
2. शर्मा, डॉ रामप्रकाश,–''मिथिला का इतिहास'', पृष्ठ 320
3. आर्यावर्त दैनिक समाचार पत्र – 16 अगस्त 1947
4. दैनिक जागरण (दैनिक समाचार पत्र) 10 नवंबर 2009
5. दैनिक जागरण (दैनिक समाचार पत्र) 10 नवंबर 2009
6. वही